श्योपुर जिले की सहरिया जनजाति के देवलोक

डॉ खेमराज आर्य सहायक प्राध्यापक इतिहास शासकीय आदर्श कन्या महाविद्यालय श्योपुर मध्यप्रदेश **Email - khemrajarya10@gmail.com** मोबाइल नंबर :– 9098913206, 8719000682

.....

श्योपुर भारत के मध्यप्रदेश राज्य का पश्चिमोत्तर दिशा में स्थित एक जिला है।श्योपुर मध्यप्रदेश की विंध्यांचल पर्वतमाला की छोटी–छोटी पहाड़ियों से घिरा हुआ, वन संपदा से परिपूर्ण, कृषि व पशुपालन के लिए प्रसिद्ध जिला हैं।श्योपुर में आदिम संस्कृतियों में सहरिया, भील, मोगिया, बंजारा, मीणा आदि जातियों की सांस्कृतिक विरासत के चिन्ह दिखाई पड़ते हैं। श्योपुर कूनो–पालपुर राष्ट्रीय उद्यान, लकड़ी की खरादी कला, लाख की चूड़ी निर्माण कला, सहरिया जनजाति की बहुलता, पार्वती एक्वाडीक्त, (नीचे पार्वती नदी एवं ऊपर चम्बल नहर बहती हैं) कूनो साइफन, (कूनो नदी के ऊपर से चम्बल नहर निकाली गई है) आदि के लिए राष्ट्रीय स्तर पर अपनी एक अलग पहचान रखता हैं। यहाँ की प्रमुख नदियों में चम्बल,पार्वती, कूनो, सीप, कुँवारी, आहेली, अमराल,कदवाल,सरारी आदि हैं। इन प्रमुख नदियों के साथ–साथ इन सभी नदियों की अनेक छोटी–छोटी सहायक नदियाँ भी प्रवाहित होती हैं। इस आधार पर यदिश्योपुर जिले को मध्यप्रदेश में " नदियों का मायका " कहा जाये तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। श्योपुर नदियों एवम् वन संपदा से संपन्न होने के कारण अनेक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवम् प्राकृतिक मनोहरी स्थलों से परिपूर्ण जिला हैं। इसीलिए श्योपुर में पूरे साल सांस्कृतिक, धार्मिक एवम् पर्यटन गतिविधियों की चहल–पहल रहती हैं। ये जानकारी सर्वेक्षण करके श्योपुर जिले के कलारना, वर्धा, वर्धा–वुजुर्ग, प्रेमनगर, सलापुरा, ढेंगदा, बगबाज, नागदा आदि गांवों के सहरिया जनजाति के स्थानीय लोगों से एकत्रित की गई।

उद्भव से संबंधित बातें

कथाओं व किंवदंतियों के रूप में इनके उद्भव व उत्पत्ति के संबंध में अलग–अलग कथाएँ मिलती है। किवदंती के अनुसार, "संसार के निर्माणकर्ता भगवान ब्रह्मा ने संसार की रचना करते समय सभी वर्णों व जातियों के लिए स्थान निश्चित किया। सबसे पहले ब्रह्मा ने सहरिया की रचना की और उसे इस निश्चित स्थान के बीचों–बीच (मध्य) में बैठाया। वह अत्यधिक सीधासाधा व सरल व्यक्ति था। जैसे–जैसे ब्रह्मा ने अन्य जातियों के लोगों को बनाया वह सहरिया के पास आकर बैठने की कोशिश करने लगे। इस कोशिश में सहरिया को खिसकाते चले गए। अपने सरल व सीधे स्वभाव के कारण वह खिसकता चला गया। जब अंतिम जातियों के निर्माण तक एक ऐसी स्थिति आई कि बेचारा सहरिया एकदम खूंट अर्थात अंतिम सिरे पर पहुंच गया। ब्रह्मा जी ने जब निरीक्षण के समय सहरिया को एकदम सिरे पर पाया तो पूछा कि उसे जब मध्य में बैठाया गया था तो वह सिरे पर कैसे पहुंच गया? वो इसका कोई जबाव नहीं दे पाया। इस पर ब्रह्माजी ने नाराज होते हुए कहा कि, वह लोगों के साथ रहने लायक नहीं है और श्राप (शाप) दिया कि वह मनुष्यों की भीड़भाड़ से अलग–थलग, एकांत और जंगल में ही बसेगा।"(1)

एक किवदंती यह भी प्रचलित है कि सहरिया जनजाति के प्रथम पित्तृ पुरुष वाल्मीकि थे। इनका मानना है कि वाल्मीकि भील जाति के थे। अतः सहरिया भीलों के सहोदर है।

सहरिया 'शबरी' से भी अपनी उत्पत्ति बताते हैं। सहरिया सौरी (शबरी भीलनी) से उत्पन्न होने के कारण शबर, सबर और सहरिया कहलाए।

सहरिया शब्द की उत्पत्ति फारसी भाषा के शब्द 'सहर' से हुई है, जिसका अर्थ जंगल है। अतः जंगल में रहने के कारण ही इनको सहरिया कहा गया है।

सहरिया जनजाति के प्रमुख पर्व–त्यौहार

सहरिया जनजाति के लोग हिन्दू धर्म को अपना धर्म मानते हैं, इसलिए सभी हिन्दू पर्व–त्योहारों को ये बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। ब्रह्मा, विष्णु, शिव, राम, कृष्ण, गणेश, हनुमान आदि देवताओं और लक्ष्मी, दुर्गा, सरस्वती आदि देवियों पर आस्था रखकर उनसे जुड़े हुए पर्व–त्यौहारों को हर्षोल्लास और बड़ी धूमधाम के साथ मनाते हैं। श्योपुर की सहरिया जनजाति द्वारा प्रमुख रूप से नवरात्रे, दशहरा, दीपावली, होली, रक्षाबन्धन, शिवरात्रि, गणेश चतुर्थी, मकर सक्रांति आदि प्रमुख पर्व–त्यौहार मनाये जाते है, लेकिन साथ ही स्थानीय लोक–देवी–देवताओं के लिए भी त्यौहार मनाये

जाते हैं। जैसे – तेजाजी, रामदेवजी, बीजासन माता आदि के त्यौहारों पर मेलों का भी आयोजन किया जाता है।इनमे से नवरात्रे और दीपावली का विवरण निम्न प्रकार हैं –

नोरता (नवरात्रे) – नवरात्रि महा में नौ दिन तक श्योपुर के कलारना, वर्धा, वर्धा–बुजुर्ग, ढेंगदा, प्रेमनगर (चम्बल नहर के किनारे, रेल की पटरी के पास), बगवाज, नागदा, जाटखेड़ा, बड़ोदा, सलापुरा आदि गाँवों में सहरिया जनजाति के लोगों द्वारा व्रत रखे जाते हैं। नौ दिनों तक इन गाँवों में माता के भजन–कीर्तन गाये जाते है एवं सप्तमी, अष्टमी व नवमी को रातजगाई (जागरण) किया जाता हैं। कलारना गाँव में दुर्गा माता की मूर्ति कुंवार महा में शिवपुरी जिले से लायी जाती हैं। माता की मूर्ति की स्थापना करने से नवरात्रि की नवमीं तक प्रत्येक दिन शाम के समय झाँकियाँ लगाई जाती हैं। प्रति दिन माता को फल, मेवा, खीर आदि का भोग लगाया जाता हैं। नौ दिनों तक सुबह–शाम माता की आरती के बाद सभी भक्तजनों को प्रसाद का वितरण किया जाता है। नवमीं या दशमीं के दिन सामूहिक भोज का आयोजन भी कुछ गाँवों में किया जाता हैं।

दीपावली – सहरिया जनजाति हिन्दू धर्मावलंबी हैं। ये जनजाति सभी हिन्दू पर्व–त्यौहार, उत्सवों को अपनी आर्थिक हैसियत अनुसार मनाते हैं। दीपावली के त्यौहार को मनाने से पहले ये भी अपने–अपने घरों की साफ–सफाई, लीपाई, पुताई और रंगाई करते हैं। लक्ष्मी पूजन दीपावली के दिन रात्रि को किया जाता हैं। श्योपुर की सहरिया जनजाति लक्ष्मी पूजन के पश्चात् गाय की पूजा भी करते हैं। दीपावली के दूसरे दिन पशुपालकों द्वारा गोवर्धन की पूजा की जाती हैं। गोवर्धन पूजा के लिए गाय के गोबर से ग्वाला (कृष्ण भगवान के रूप मे),गाय, पर्वत आदि बनाये जाते हैं। सबसे पहले गाय–बैल, बकरा–बकरी को नहलाया जाता हैं। फिर उनको सजाया जाता हैं। इनकी जोड़े से पूजा की जाती हैं। इस अवसर पर खीर–पुड़ी, पुए बनाकर, पशुओं को नहलाकर, पशुओं के सींगों को पक्के रंग से रंगकर व पोतकर, शरीर के बालों को खड़ी, हरमिच व रंगों से रंगकर, बाजार से रंग–बिरंगी व फूलों की मालाएँ एवं घंटी लाकर पहनाते हैं। गोवर्धन पर बैसंदर करते हैं, अगरबत्ती व धूप लगाते हैं। फिर पशुओं को जोड़े पशु के चरवाहे द्वारा गोवर्धन के पास लाये जाते हैं। पशुओं व चरवाहे की आरती उतारी जाती हैं और पूजा की जाती हैं। फिर वहाँ उपस्थित सभी महिला–पुरुषों द्वारा गोवर्धन के गीत गाते हुए परिक्रमा लगाई जाती हैं। गोवर्धन पूजा का मुख्य उद्देश्य कृषि, पशुओं और धन–धान्य की पूर्ति नियमित रूप से होती रहे इसलिए की जाती हैं।

सहरियाओं के प्रमुख लोकदेवता व देवियाँ

हीरामन बाबा – मवेशी (पशुओं) के प्रमुख देवता हैं। इनको रक्षक देवता माना जाता हैं। पशुओं व मनुष्य के बीमार होने पर हीरामन बाबा के बैसन्दर की भभूतीबानी (राख) को बीमार पशुओं के शरीर पर लगाया जाता है और मनुष्य को भभूत को प्रसाद के रूप में खिलाया जाता हैं। मनुष्य व पशुओं के स्वास्थ्य होने पर घी का होम(आधिकांश डालडा) का किया जाता हैं और प्रसाद का भोग लगाकर बांटा जाता हैं।

मोतीसिंह बाबा – मोतीसिंह बाबा का मुख्य मंदिर श्योपुर की बड़ोदा तहसील के गाँव मकड़ावदा में बना हुआ हैं। ये बीमारी व संकट के रक्षक देवता के रूप में पूजे जाते हैं। मनुष्य के स्वास्थ्य होने पर प्रसाद, अगरबत्ती, धूप, घी आदि से पूजा–अर्चना की जाती है और यदि कोई मन्नोती मांगी है तो उस मन्नोती को पूरा अनिवार्य रूप से किया जाता है क्योंकि ऐसा नहीं करने पर बाबा नाराज होकर अनिष्ट कर देते हैं। साल मे एक बार मोतीसिंह बाबा की सामूहिक रसोई का आयोजन अवश्य किया जाता हैं। पशुओं के स्वास्थ्य होने पर घी का धुपाडा(अग्नि में घी की आहुति दी जाती है) किया जाता है, प्रसाद चढाकर बांटा जाता हैं।

बरेठादेव – ये नदी में निवास करने वाले देवता माने हैं। ये उस समय नाराज हो जाते हैं जब इनकी मांगी हुई मन्नोती को पूरा नहीं किया जाता है और ये छोटे बच्चों को रुलाते व बीमार कर देते है और लडकियों को बीमार कर देते हैं। इनको खुश करने के लिए बकरे या मुर्गे की बलि दी जाती हैं। बलि देने पर ये बच्चों और लड़कियों को रोगमुक्त कर देते हैं।

तेजाजी – भादों माह में राजस्थान व मध्यप्रदेश के प्रसिद्ध व ऐतिहासिक लोक देवता तेजाजी महाराज का पर्व इस जनजाति द्वारा बड़ी ही धूमधाम से मनाया जाता है। तेजाजी अपनी चमत्कारी व अलौकिक शक्तियों के कारण इन राज्यों की सभी जातियों व जनजातियों में समान श्योपुर की ये जनजाति भी अटूट श्रद्धा व आस्था रखती है। इसलिए श्योपुर के अधिकांश सहरानों में तेजाजी महाराज व उनके चाचा जी ताखा जी महाराज का चबूतरा या थान (स्थान) बना होता है। इनमें से श्योपुर की चंबल नहर के किनारे स्थित मीणा छात्रावास के पास सलापुरा के सहराने के चबूतरे पर

प्रतिवर्ष भादो की दशमी को एक मेले का आयोजन किया जाता है। ऐसा ही एक इस जनजाति का मेला कलारना गांव में चंबल नहर के किनारे स्थित हनुमान मंदिर के सामने बने हुए तेजाजी व ताखा जी के चबूतरो पर भी भरता है।

कलारना गाँव में ताखाजी महाराज का चबूतरा

कलारना गांव में तेजाजी महाराज का मंदिर

बीजासन माता – ये सहरिया जनजाति की कुलदेवी हैं। इनका मुख्य मंदिर इन्द्रगढ गाँव जिला बूंदी राजस्थान में बना हुआ हैं। चेत्र–कुंवार माह के नवरात्रों में श्योपुर के गाँवों से इस जाति के लोग इन्द्रगढ बीजासन माता के दर्शन करने जाते हैं। अन्य अवसरों पर पर भी ये दर्शन के लिए जाते हैं। बीजासन माता से जो मनोकामनाएं की जाती है यदि वो पूरी हो जाती है तो फिर मालपुए की देवडी चढ़ाई जाती है और जिस की आर्थिक दशा अच्छी होती हैं वो बकरे की बलि देकर रसोई (सामूहिक भोज) की जाती है, जो इन्द्रगढ जाकर या गाँव में भी दी जाती है। पुड़ी–सब्जी, नुक्ती आदि की भी रसोई की जाती हैं।

प्रमुख गोत्र व गोत्र से संबंधित लोक देवी–देवता

सहरिया जनजाति के श्योपुर में निवास करने वाले प्रमुख गोत्रों के प्रमुख लोक देवी–देवता इस प्रकार हैं –

1. **कोल** – इस गोत्र की एक महिला द्वारा सर्वेक्षण के दौरान बताया गया की वो सेसईपुरा गाँव विकासखंड कराहल से उनकी कुलदेवी कसरोली माता है, जिनका मुख्य चबूतरा कसरोली गाँव जिला शिवपुरी में हैं।
2. **सौपरिया** –ऐसी किवदंती प्रचलित है की श्योपुर किले के निर्माण के समय इसी गोत्र के एक नवयुवक की बलि दी गई थी। इसलिए इनके गोत्र 'सौपरिया' के नाम पर ही 'श्योपुर' नाम रखा गया हैं। इस गोत्र के सहरिया वर्धा और वर्धा–बुजुर्ग गाँवों में आज भी निवास करते हैं। इस गोत्र के कुलदेवता लच्छीराम बाबा है। लच्छीराम बाबा का मुख्य चबूतरा वर्धा गाँव में अमराल नदी के किनारे एक विशाल बरगद के नीचे बना हुआ हैं। चबूतरे पर सिंदूर से पुता हुआ पत्थर का एक स्तम्भ गड़ा हुआ है जिसके पास दो त्रिशुल और एक भाला व अनेक रंग–बिरंगे झंडे लगे हुए हैं। इस गोत्र की कुलदेवी बीजासन माता हैं।

वर्धा गांव का लच्छीराम बाबा का चबूतरा

3. गोराछिया – गोराछिया गोत्र का कुलदेवता भौमिया (भूमिया) बाबा हैं। इनका उपनाम कुवरिया बाबा भी हैं। भौमिया बाबा का मुख्य चबूतरा वीरपुर– श्यामपुर गाँवों के पास के जंगल में कदावर स्थान पर बना हुआ हैं।

4. मंगरिया – इस गोत्र के कुलदेवता नाहरसिंह बाबा हैं। नाहरसिंह बाबा का मुख्य मन्दिर या चबूतरा लाडपुरा गाँव में बना हुआ है। ये बीजासन माता को अपनी कुलदेवी मानते हैं।

5. लाँगुरिया – ये गोत्र लोंगई के नाम से भी जाना जाता हैं। इनके प्रमुख कुलदेवता गोरादेव बाबा है, जिनका मुख्य मंदिर ढ़ोंढपुर गाँव में बना हुआ हैं। मंदिर में गोराजी की मूर्ति स्थापित की हुई है।

6. चौहान या छुआन – इस गोत्र के सहरिया लरेठ बाबा को अपना कुलदेवता मानकर पूजते हैं। इनके प्रमुख अस्त्र तलवार और गोठा (गदा) है। लरेठ बाबा का मुख्य मंदिर वीरपुर के जंगल में बना हुआ हैं।

7. **रावरिया** – इनके प्रमुख कुलदेवता भेरों का मुख्य चबूतरा कलारना गाँव में बना हुआ हैं।

8. **बारेलिया** – इस गोत्र के प्रमुख कुलदेवता गुल बाबा है, जिनका मुख्य मंदिर ढोढर कस्बे के पास बलानी गाँव मे बना हुआ हैं। कोई मन्नोती पूरी होने या नवरात्रोंमें इसकी पूजा करने जाते हैं।

9. **खड्या या खडेनी** – खड्या गोत्र के कुलदेवता करस बाबा हैं। खड्या बाबा का मुख्य मंदिर रायपुरा–धन्याचा में बना हुआ हैं। इनकी कुलदेवी अन्नपूर्णा माता है जिसका भव्य मंदिर कराहल विकासखंड के पनवाडा गाँव में बना हुआ हैं। खड्या गोत्र के लोग अधिकांश इसी मंदिर पर अपने परिवार के लड़कों की जडुली (मुण्डन) उतरवाते है (लड़के के सिर के बाल पहली बार काटना)। कोई मन्नोती पूरी होने पर मंदिर पर जाकर या उसके नाम से रसोई (सामूहिक भोजन) गाँव में आयोजित की जाती हैं।

10. **सोलकिया या सोलंकी** – इस गोत्र के मुख्य कुलदेवता ठाकुर बाबा (जिसका मुख्य मंदिर विकासखंड कराहल की घाटी शिवपुरी रोड पर बना हुआ हनुमान मंदिर) हैं। जडुली या मन्नोती पूरी होने पर या किसी वैवाहिक व मांगलिक पारिवारिक आयोजन के समय पूजा–अर्चना व सामूहिक रसोई का आयोजन यहाँ आकर या इनके नाम से पूजा–अर्चना के बाद किया जाता हैं।

11. **देसवरिया** – इस गोत्र के कुलदेवता बाबा नाहरसिंह का मुख्य मंदिर राजस्थान के बारां जिले के विकासखंड किशनगंज में बना हुआ हैं। इस गोत्र की कुलदेवी रामगढ़ की माता का भव्य व विशाल मंदिर प्राकृतिक वन एवं विंध्यांचल पर्वत की ऊँची चोटी पर राजस्थान के बारां जिले के विकासखंड मांगरोल की ग्राम–पंचायत रामगढ़ में बना हुआ हैं। इनकी कुलदेवी पर शादी के छह माह या एक साल बाद गौना (शादी होने के बाद दुल्हन को उसका भाई या परिवार के लोग दुल्हे के घर से अपने घर ले आते है तब दूसरी बार दुल्हन गौने के समय ही विदा की जाती है और अपने पति के यहाँ आकर अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को प्रारंभ करती हैं) होने पर रसोई की जाती हैं।

12. **बाज्जुला** – इस गोत्र के मुख्य कुलदेवता दोरेठ बाबा का मुख्य मंदिर श्योपुर जिले श्यामपुर के जंगल में बना हुआ हैं। इन गोत्रों के अतिरिक्त अन्य गोत्र की कुलदेवियों व कुलदेवताओं के भी

अपने–अपने प्रमुख मंदिर एवं चबूतरे होते हैं। देवशयनी व देवउठनी ग्यारस पर देवताओं के साथ अपने लोकदेवताओं की पूजाअर्चना करके क्रमशः देवताओं को सुलाते और उठाते हैं। इनके प्रमुख कुलदेवियों–कुलदेवताओं के चबूतरे हर सहराने में निवास करने वाले प्रत्येक गोत्र का होता हैं। अधिकांश कुलदेवताओं के मुख्य अस्त्र–शस्त्र तलवार और गदा हैं। सहराने में बने हुए चबूतरों में झण्डे, त्रिशुल, भाला, चिमटा और पत्थर की मूर्तियाँ या गोलाकार पत्थर पर सिंदूर लगाकर स्थापित होते हैं। इन मंदिर या चबूतरों पर कुलदेवियों–कुलदेवताओं की पूजा करने के लिए भोपा (पुजारी) होता हैं। जो नियमित रूप से सुबह और शाम पूजा–अर्चना का काम करता हैं। विशेष तिथियों, पर्व–त्यौहार, लोक देवी–देवताओं के उत्सव आदि के अवसर पर भोपा ही पूजा–अर्चना व अन्य सभी कार्यक्रमों का आयोजन संपन्न करवाता हैं। जिस मन्दिर या चबूतरे पर भोपा पूजा का कार्य करता है, उसी भोपे को उस कुलदेवी–कुलदेवता का भाव (कुलदेवी–कुलदेवता की आत्मा पूजा करने वाले भोपा के शरीर में विशेष तिथि पर आती हैं) आता हैं।किसी कुँवारी कन्या या शादीशुदा महिला के शरीर में बुरी आत्मा (चुडैल/डायन) के प्रवेश कर जाने पर हनुमानजी, बीजासन माता या कुल देवी–देवताओं का आह्वान भोपाओं द्वारा करके, भोपाओं के शरीर में देवी–देवताओं का प्रवेश हो जाता हैं और फिर उस बुरी आत्मा से छुटकारा पाने के लिए कंडा–ताबीज किया जाता हैं।

श्योपुर शहर की चम्बल नहर को पार करने के बाद लगभग 2 किलोमीटर नहर के किनारे–किनारे बांयी दिशा मे रेल की पटरी को पार करते ही नहर के किनारे प्रेमनगर सहराना बसा हुआ हैं। इस सहराने के चबूतरे पर दोरेठ बाबा, भुमिया बाबा, ठाकुर बाबा, जिन्न बाबा, बीजासन माता आदि की सिंदूर लगी गोलाकार मूर्तियाँ स्थापित हैं। इस चबूतरे पर अस्त्रों में भाला, त्रिशुल, गोठा (गदा) व चिमटा आदि रखे और गढ़े हुए हैं। बीजासन माता का झंडा पंचरंग का ऊपर से क्रमशः पीला, लाल, हरा, सफेद और काले रंग का लगा हुआ है साथ में कुछ सफेद रंग के झण्डे भी लगे हुए हैं। इस चबूतरे की पूजा करने वाले भोपा को अमावस्या या पूर्णिमा की सप्तमी को बीजासन माता व जिन्न बाबा का भाव आता हैं। इस सहराने के चबूतरे पर प्रत्येक माह की अमावस्या को खीर–पूड़ी व सब्जी बनाकर, भोग लगाकर कन्याभोज का आयोजन किया जाता हैं।

श्योपुर के सहरिया जनजाति की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक स्थिति अत्यंत दयनीय और पिछड़ी हुई हैं। ये आज भी आधुनिकता के साथ स्वयं को ढालने में बहुत पीछे हैं। इसलिए आज भीं ये जनजाति अनेक कुप्रथाओं, कुरीतियों, रूढ़ियों और अंधविश्वासों के जाल में जकडी हुई है। इसी कारण ये जनजाति भारत की अति पिछड़ी और अति कुपोषित जनजातियों में शामिल हैं। शराब, बीड़ी, तंबाकू विशेषकर पानमसाला (गुटखा) आदि के अत्यधिक सेवन के कारण टीबी आदि बीमारियों से अधिक पीड़ित रहते हैं। अतः इनको समाज के विकास से जोडकर विकास के रास्ते पर लाने की बहुत अधिक आवश्यकता है जिससे की ये जनजाति भी सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक रूप से विकास पथ पर कदमताल करके स्वयं का विकास कर सके, क्योंकि धार्मिक और सांस्कृतिक रूप से ये जनजाति बहुत अधिक संपन्न हैं।

सन्दर्भ :–

1. एस.के.भटनागर, गाधेर, ए विलेज सर्वे, सेंसस ऑफ इंडिया, 1961, प्रकाशित 1968।